1. अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति ।
   A non-flying eagle does not move forward a single step.

2. अङ्कमारुह्य सुप्तं हि हत्वा किं नाम पौरुषम् ।
   गोद मे सोये हुए को मारना ही क्या शूरता है ?

   Can killing one who is asleep on someone's lap constitute bravery?

3. अङ्गारः शतधौतेन मलिनत्वं न मुञ्चति ।
   कोयला सैकड़ों बार धोने पर भी सफेद नहीं होता ।

   Coal does not loose its dirt (does not become white) even it were to be washed a hundred times. (People do not give up their intrinsic natures.)

4. अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति ।
   The virtuous make good their promise.

5. अतिपरिचयादवज्ञा सन्ततगमनादनादरो भवति ।
   Familiarity breeds contempt.

6. अतिदर्पे हता लङ्का ।
   Pride goeth before a fall.

7. अति सर्वत्र वर्जयेत् ।

किसी भी चीज की अति बहुत बुरी होती है ।

Excess in all matters is to be avoided.

8. अतिस्नेह पापशङ्की ।
Over-affection is apt to suspect evil.

9. अतृणे पतिते वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति ।

घास-फूस न मिलने पर अग्नि स्वयं शान्त हो जाती है ।

If fire were not to receive fuel (if fire were to 'fall' in a place where there is no grass) it would extinguish by itself.

10. अधिकन्तु न दोषाय ।

जितना अधिक हो उतना ही अच्छा ।

The more the merrier/ more is better.

11. अध्रुवाद् ध्रुवं वरम् अथवा वरमद्य कपोतो न श्वो मयूरः।
A bird in hand is better than two in the bush.

12. अन्या गतिर्नास्ति, अन्यच्छरणं नालोक्यते ।
There is no alternative.

13.अपि धन्वन्तरिः वैद्यः किं करोति गतायुषि ।

When it is time to die, what can even Dhanvantari do?

14.अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ।

अप्रिय और हितकर बात कहने और सुनने वाले, दोनों ही मुश्किल से मिलते हैं ।

It is difficult to find a speaker and a listener in matters relating to that which is beneficial and difficult to digest.

15.अभ्यासात् जायते नृणां द्वितीया प्रकृतिः।

किसी चीज का अभ्यास करते रहने पर वह धीरे- धीरे स्वभाव ही बन जाता है ।

The constant study of something involves its absorption and then becomes a man's second nature.

16.अर्धोघटो घोषमुपैति नूनम् अथवा सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दम् ।

अधजल गगरी छलकत जाय ।

An empty vessel makes much noise.

17.अल्पविद्या भयङ्करी ।

A little knowledge is a dangerous thing.

18.अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं शुभाशुभम् ।

As you sow, so shall you reap.

19.अव्यवस्थितचित्तस्य प्रसादोऽपि भयङ्करः ।

अव्यवस्थित बुद्धि वाले लोगों की मेहरबानी से भी डरना चाहिये ।

Favour received from people whose hearts are not in the right place, is dangerous.

20.आकण्ठमग्नोऽपि श्वा लिहत्येव जिह्वया ।

किसी की कोई आदत मरने तक भी नहीं छुटती ।

Even when submerged in water upto its neck, the dogs still licks with its tongue. (A habit lasts a lifetime.)

21. आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया ।

The command of elderly persons should not be called in question.

22. आतुरे नियमो नास्ति ।

घबराहट में कानून नहीं दिखाई देता ।

There are no rules to be followed in bad times.

23. आतुरे व्यसने दुर्भिक्षे यस्तिष्ठति स बान्धवः ।

बीमारी, मुसीबत और अकाल के समय जो साथ दे वही सच्चा बान्धव है ।

In illness, bad times and famine, he who sticks by one is the true friend.

24. आपदर्थे धनं रक्षेत् ।

One should save for a rainy day.

25. आपदि स्फुरति प्रज्ञा यस्य धीरः स एव हि ।

आपत्ति के समय जिसकी बुद्धि काम दे उसी को धैर्यवान् कहना चाहिये ।

Whose intelligence is sparked into life in difficult times, he is the courageous one.

26. आमुखायाति कल्याणं कार्यसिद्धिं हि शंसति ।

Coming events cast their shadow before.

27. आवेष्टितो महासर्पैः चन्दनं किं विषायते ।

चन्दन, विष व्याप्त नहीं, लपटे रहत भुजङ्ग ।

Even though serpents coil around the sandalwood tree, it can never be poisoned.

28. आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ।

आहार और व्यवहार में सङ्कोच न करनेवाला सुखी रहता है ।

He who is unhindered in matters relating to food and to behaviour is a happy man.

29. इतो भ्रष्टस्ततो नष्टः।

Caught between the Devil and the deep blue sea.

30. इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैः गुणैः ।

Self praise is no recommendation.

31. उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।

उदारचरित पुरुषों के लिये तो सारा संसार ही अपना कुटुम्ब है ।

To the generous, the whole world is his family.

32. उदिते हि सहस्रांशौ न खद्योतो न चन्द्रमाः ।

सूर्य के उदय हो जाने पर न जुगनू और न चन्द्रमा ही जँचता है ।

When the thousand-rayed sun rises, neither the firefly nor the moon can make their presence felt.

33. उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः ।

Diligence is mother of good luck.

34. उपकारः प्रत्युपकारेण निर्यातयितव्यः ।

One good turn deserves another.

35. उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ।

मूर्ख उपदेश सुनकरऔर ही भड़क उठते हैं ।

Advice only serves to further instigate fools, not to quieten them.

36. उपायं चिन्तयेत् प्राज्ञः तथा अपायञ्च चिन्तयेत् ।

बुद्धिमान् लोगों को चाहिये कि कोई उपाय सोचने के साथ-ही-साथ उसके आगे –पीछे भी सोच लें ।

The wise ought to think of not only a solution but everything that is related to it to ensure its success.

37. उष्णो दहति चाङ्गारः शीतः कृष्णायते करम् ।

अङ्गारा यदि गरम है तो हाथ जला देगा और बुझकर ठण्ड़ा हो गया तो हाथ काला कर देगा ।

Coal when hot, burns the hand and when cold, blackens it.

38. एकस्य हि विवादोऽत्र दृश्यते न तु प्राणिनः ।

It takes two to argue **or** one swallow does not a summer make.

39. एका क्रिया द्व्यर्थकरी (dvyarthakari) प्रसिद्धा।

To kill two birds with one stone.

40. कण्टकेनैव कण्टकम् **अथवा** पिशाचानां पिशाचभाषयैवोत्तरं देयम् ।

Tit for tat.

41. कष्टः खलु पराश्रयः ।

Dependence is indeed painful.

42. काकोऽपि न किं कुरुते चञ्च्वा सोदरपूरणम् ।

अपना पेट कौन नहीं भर लेता ।

Does not the crow too use its beak to fill its stomach?

43. कालस्य कुटिला गतिः ।

समय की गति टेढ़ी होती है ।

The passage of time is indeed not straight.

44. काले खलु समारब्धाः फलं बध्नन्ति नीतयः ।

उचित समय पर अपनाई गई नीतियाँ निश्चय ही फल देती हैं ।

Disciplines adopted at the correct time come with their desired fruits attached.

45. काले दत्तं वरं ह्यल्पमकाले बहुनाऽपि किम् ?

समय पर थोड़ा भी दिया जाय तो बहुत है, बाद में अधिक भी बेकार ।

Help provided at the right time, even if little is a great thing. How useless is receiving great help at an inappropraiate time!

46. किं मिष्टान्नं खरशूकराणाम् ।

गधों और सूअरों को मिठाई खिलाने से क्या लाभ ? जैसे भैंस के आगे बीन बजावे जो खड़ी पगुराय ।

What is the purpose of feeding sweets to donkeys and pigs ?

47. केतकी गन्धमाघ्राय स्वयं गच्छन्ति षट्पदाः ।

केतकी के फूल की सुगन्ध सूँघकर भौंरें स्वयं चले जाते हैं ।

The fragrance of the Ketaki blossom attracts bees effortlessly.

48. को जानाति जनो जनार्दनमनोवृत्तिः कदा कीदृशी ?

कौन जानता है भगवान् कब क्या करते हैं ?

Who knows what the Lord intends to do and in what manner.

49. को न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः ।

Wealth is a great attraction **or** Friends are plenty when the purse is full.

50. खलः सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति ।

दुष्ट लोग दूसरों के छोटे-से-छोटे दोष को भी देख लेते हैं ।

The wicked see every fault in others even if they are small as mustard seeds.

51. खलः करोति दुर्वृत्तं नूनं फलति साधुषु ।

दुष्ट लोग बुरा काम करते हैं किन्तु उसे सज्जनों को भुगतना पड़ता है ।

The wicked perform evil deeds and the effect is upon good souls.

52. गण्डस्योपरि पिटिका संवृत्ता ।

A pimple has grown upon a boil, i.e., this is another evil to add to the first.

53. गतस्य शोचनं नास्ति ।

It is no use crying over spilt milk **or** Let bygone be bygone.

54. गतः कालो न चायाति ।

Time once past cannot be recalled.

55. गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः ।

गुणियों के गुण की ही कदर होती है, उनके कुल या उनकी उम्र की नहीं ।

The good qualities in the great souls must be admired, not their age and not the external factors that mark them.

56. वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति मनीषिणः ।

When in Rome, do as the Romans do. (People should act according to their circumstances.)

57. जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।

Every drop of water makes a mighty ocean. (The sequential falling of little drops of water fill the pot)

58. जानीयात् व्यसने मित्रम् ।

आपत्ति काल में मित्र की परीक्षा की जाती है ।

A friend is recognized in times of difficulties.

59. तस्य तदेव हि मधुरं यस्य मनो यत्र संलग्नम् ।

That is sweet to which one is attracted to.

60. तृषितो जाह्नवीतीरे कूपं खनति दुर्मतिः ।

गङ्गा के तट पर रहने वाला व्यक्ति प्यास लगने पर कुआँ खोदने का उपक्रम करता है तो उसे मूर्ख नहीं तो क्या कहेंगे ?

The thirsty fool digs a well at the banks of the Ganga.

61. तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते ।

तेजस्वयों की उम्र नहीं देखी जाती ।

The enlightened ones are not recognized by their years.

62. त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि काले ।

मुसीबत के समय भी धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए ।

Courage should not be forsaken at difficult times.

63. दशाननोऽहरत् सीतां बन्धनश्च महादधेः ।

सीता चुराई रावण ने और बाँधा गया बेचारा समुद्र ।

Ravana carried away Sita and the Great Ocean was bound instead!

64. दुग्धधौतेऽपि किं याति वायसः कलहंसताम् ।

दुग्ध से नहला देने पर भी कौआ हंस नहीं बनता ।

Even if the crow were to be bathed in milk, it would never become a swan.

65. दुग्धं पश्यति मार्जारो न तथा लगुडाहतिम् ।

दूध को देखते ही बिल्ली 'डण्डे की मार' को भूल जाती है । अर्थात् किसी काम को करते समय मनुष्य उसके परिणाम को नहीं सोचता ।

The cat sees the milk and not the punishment rendered with a stick.

66. दुर्दरा यत्र वक्तारस्तत्र मौनं हि शोभनम् ।

जहाँ वाचाल लोग वक्ता हों वहाँ चुप रहना ही अच्छा है ।

Where speakers congregate, one would do best to be silent.

67. दुरस्थाः पर्वताः रम्याः ।

Distance lends enchantment to the view.

68. न काचस्य कृते जातु युक्ता मुक्तामणेः क्षतिः ।

काँच के लिए मणि को गँवाना उचित नहीं ।

It is not advisable to lose gems for the sake of glass.

69. न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे ।

While the grass grows the horse starves. (It is not correct to dig a well when one's house is being ravaged by fire.)

70. नक्षत्रताराग्रहसङ्कुलाऽपि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः ।

हजारों तारें, ग्रह आदि क्यों न हो किन्तु चाँदनी रात तो चन्द्रमा के कारण ही होती है ।

There may be many a star and planet but the moonlit night owes itself to the one moon.

71. न तितिक्षासममस्ति साधनम् ।

सहनशीलता से बढ़कर दूसरा कोई श्रेष्ठ साधन नहीं है ।

There is no greater means to achieving one's goal than endurance.

72. न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्षते ।

धर्म के विषय में छोटा या बड़ा नहीं देखा जाता ।

Age does not determine the one who is established well in Dharma.

73. न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्तमानाम् ।

उत्तम पुरुषों का स्वभाव मरणपर्यन्त भी नहीं बदलता ।

The great ones' natures do not change even at the time of death.

74. न बिडालो भवेद्यत्र तत्र क्रीडन्ति मूषकाः ।

Where the cat is away the mice will play.

75. न भवति पुनरुक्तं भाषितं सज्जनानाम् ।

सज्जन लोग अपनी बात से नहीं पलटते ।

Good people do not go back on their word.

76. न हि अमूला जनश्रुतिः ।

अफवाह के पिछे कुछ-न-कुछ सचचाई होती ही है ।

Gossip has some base.

77. न सिद्धवाक्यानि अतिक्रम्य गच्छति विधिः ।

सिद्ध पुरुषों के वाक्यों का उल्लङ्घन स्वयं भाग्य भी नहीं कर सकता ।वे जो कहते हैं वही होता है ।

Fate cannot transcend the words of the enlightened ones.

78. न सुवर्णे ध्वनिः तादृक् कांस्ये प्रजायते ।

सोने में उतनी आवाज नहीं होती जितनी कि कांसे में अर्थात् नीच लोग बहुत बकवास करते हैं ।

Gold does not make as much a noise as brass does.

79. न स्पृशति पल्वलाम्भः पञ्जरशेषोऽपि कुञ्जरः क्वापि ।

पञ्जरमात्र रह जाने पर भी हाथी कभी छिछली तलैया का पानी नहीं छूता ।

An elephant, even if caged, does not touch the waters of a small pool.

80. न हि सुखं दुःखैर्विना लभ्यते ।

No pains no gains.

81. न हि सुप्तस्य सिंहस्य मुखे मृगाः ।

सोये हुए सिंह के मुख में अपने-आप मृग नहीं घुस जाता, उसके लिए उसे प्रयास करना पड़ता है ।

The deer do not enter a sleeping lion's mouth.

82. नारिकेलसमाकारा दृश्यन्ते हि साधवः ।

सज्जन लोग नारियल के समान ऊपर से कठोर किन्तु अन्दर से कोमल होते हैं ।

Good souls are like the coconut....hard on the outside but gentle within.

83. नासमीक्ष्य परं स्थानं पूर्वमायतनं त्यजेत् ।

अगला कदम जमा लेने पर ही पिछला कदम उठाना चाहिये ।

Without checking where the next step should be placed, the previous one should not be moved.

84. निजसदननिविष्टः श्वा न सिंहायते किम् ?

Every cock fights best on its own dung hill.

85. निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते ।

The castor plant stands as a tree in a place that is treeless.

86. पङ्को हि नभसि क्षिप्तः क्षेप्तुः पतति मूर्धनि ।

Slander hurts the slanderer.

87. पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते ।

Merits command notice or attention everywhere.

88. पयः पानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम् ।

Snake’s venom increases by drinking milk.

89. पवर्तखनने मूषकोपलब्धिः ।

खोदा पहाड़ निकली चुहिया ।

The mountain was dug and a mouse emerged.

90. पाणौ पयसा दग्धे तक्रं फूत्कृत्य पामरः पिबति ।

A burnt child dreads the fire. (a child, whose hand has been burnt by hot milk, blows at the buttermilk to cool it.)

91. प्रक्षालनाध्दि पङकस्य दूरादस्पर्शनं वरम् ।

Prevention is better than cure.

92. प्राणिनां हि निष्कृष्टापि जन्मभूमिः परा प्रिया **अथवा** जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

East or west home is the best.

93. प्रारब्धमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति ।

अच्छे लोग अपने प्रारम्भ किये कार्यों को पूरा करके ही छोड़ते हैं ।

Great souls do not abandon work that they have started.

94. प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति मानवाः ।

प्रिय वचन बोलने से ही सभी प्रसन्न हो जाते हैं ।

Sweet words make all people happy.

95. बन्धनभ्रष्टो गृहकपोतश्चिल्लाया मुखे पतितः ।

Out of the frying pan into the fire.

96. बलवति सति देवे बन्धुभिः किं विधेयम् ?

भाग्य के प्रबल होने पर बन्धु-बान्धव क्या बिगाड़ सकते हैं ?

When one's destiny is strong what can friends and relatives do?

97. बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः **अथवा** गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः ।

The mighty knows what might is and not the weak.

98. बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा ।

ईश्वर की इच्छा ही प्रबल होती है ।

The Lord's desire surpasses all.

99. बह्वारम्भे लघुक्रिया ।

Much ado about nothing.

100. बालानां रोदनं बलम् ।

Crying is the only strength of a child.

101. बुद्धिर्यस्य बलं तस्य ।

जिसके पास बुद्धि है, उसी के पास बल है ।

He who has intelligence, is strong.

102. बुभुक्षितं न प्रतिभाति किञ्चित् ।

भूखे को कुछ नहीं सुझता ।

The hungry are not aware of anything else.

103. बुभुक्षितः किं न करोति पापम् ?

मरता क्या नहीं करता ?

Will not the hungry commit a crime?

104. बुभुक्षितैर्व्याकरणं न भुज्यते न पीयते काव्यरसः पिपासुभिः ।

भूखे लोग व्याकरण नहीं खाते और प्यासे काव्यरस को नहीं पीते ।

The hungry cannot eat grammar nd the thirsty cannot drink the nectar of poetry.

105. ब्रुवते हि फलेन साधवो न तु कण्ठेन निजोपयोगिताम् ।

Good men prove their usefulness by deeds, not by words.

106. भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैः ।

फलों से लदकर पेड़ स्वयं झुक जाते हैं ।

Fruit laden trees bend low. (Great souls are humble.)

107. भवितव्यतानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र ।

होनहार वीरवान के होत चीकने पात।

For those who are optimistic, doors open everywhere.

108. भिन्नरुचिर्हि लोके ।

संसार में अलग - अलग मनुष्यों की अलग - अलग रुचि होती है ।

People have different tastes.

109. भूयोऽपि सिक्तः पयसा घृतेन न निम्बवृक्षो मधुरत्वमेति ।

बारम्बार दूध-घी से सीञ्चने पर भी नीम का वृक्ष कभी भी मिठा नहीं होता ।

Even if nourished by milk and ghee, the Neem tree does not become sweet. (The fruit and the leaves of the tree are bitter.)

110. मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदि हालाहलं विषम् ।

मुख में राम बगल में छुरी ।

Sweetness on his tongue, but his heart is filled with poison. (Good on the outside and wicked within.)

111. मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ।

मनुष्यों के बन्धन और मोक्ष का कारण मन ही है ।

The mind alone is the reason for man's bondage or liberation.

112. मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः ?

मन के सन्तुष्ट होने पर क्या धनी और क्या निर्धन ?

When the mind is content, who is rich and who poor?

113. मनुष्याः स्खलनशीलाः ।

मनुष्य से भूल हो ही जाती है ।

Men make mistakes.

114. मनोराज्यविजृम्भणकरणम् ।

Building castles in the air.

115. मन्दोऽप्यविरतोद्योगः सदा विजयभाग्भवेत् **अथवा** शनैः पन्थाः शनैः कन्था शनैः पर्वतलङ्घनम् ।

Slow and steady wins the race.

116. मन्ये दुर्जनचित्तवृत्तिहरणे धाताऽपि भग्नोद्यमः ।

दुर्जन की चित्तवृत्ति बदलने में स्वयं ब्रह्मा भी समर्थ नहीं है ।

Even Brahma cannot convert an evil person's mind.

117. महाजनो येन गतः स पन्थाः ।

Do what the great men do.

118. मातर्लक्ष्मि तव प्रसादवशतो दोषा अपि स्युर्गुणाः ।

हे मा लक्ष्मि ! तम्हारी कृपा से दोष भी गुण हो जाते हैं ।

Mother Lakshmi, With Your favour, even faults become merits!

119. मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता ।

कम बोलना और सारयुक्त बोलना – यही बोलने की श्रेष्ठ कला है ।

Expertise in speaking constitutes speaking little and speaking that which has significance.

120. मृगाः मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति ।

Birds of the same feather flock together.

121. यत्र चोरा न विद्यन्ते तत्र किं स्यान्निरीक्षकैः ।

Where there is peace at home, there is no need of a judge.

(Where there are no thieves there is no need of policemen.)

122. यथाकालं व्यवहर ।

Adapt your conduct to circumstances.

123. यथा वृक्षस्तथा फलम् ।

As the tree, so the fruit.

124. यद्धात्रा त्रा निजभालपट्टलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः ।

विधिकर लिखा को मेटन हारा ।

Who has the capacity to erase what Lord Brahma has written upon his forehead?

125. यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नाकरणीयं नाचरणीयम् ।

यद्यपि कोई कार्य ठीक है, किन्तु सारा समाज उसके विरोध में है तो उसे नहीं करना चाहिये ।

Though the action may be pure, if it does not have the permission of the people, it must not be done and must not be followed.

126. यस्तु क्रियावान् पुरुषः स एव ।

वही मनुष्य है, जो क्रियावान् हो ।

He alone is a man who works.

127. याचको याचकं दृष्ट्वा श्वानवद् गुर्गुरायते ।

Two of the traders seldom agree.

(A beggar, when he sees another one, growls like a dog.)

128. यादृशास्तन्तवः कामं तादृशो जायते पटः ।

जैसा सूत वैसा वस्त्र ।

As the thread, so the cloth.

129. यवानो विस्मरणशीलाः ।

The youth is apt to forget.

130. ये गर्जन्ति मुहुर्मुहुर्जलधरा वर्षन्ति नैतादृशाः ।

Barking dogs seldom bite.

(Thundering clouds do not shower.)

131. यो अत्युन्नतः प्रपतति किमत्र चित्रम् ?

जो अधिक ऊँचाई पर चढ़ता है वह गिरता ही है, इसमें आश्चर्य की क्या बात है ?

He who climbs extremely high, falls. What is surprising about this?

132. यो यद्वपति बीजं लभते सोऽपि तत्फलम् ।

As you sow, so shall you reap.

133. लोके गुरुत्वं विपरीततां वा स्वचेष्टतान्येव नरं नयन्ति ।

Man is the architect of his own fortune.

134. लोभो मूलमनर्थकम् ।

लोभ ही सब बुराइयों की जड़ है ।

Greed is the source of destruction.

135. वचस्तत्र प्रयोक्तव्यं यत्रोक्तं लभते फलम् ।

बोलना वहीं अच्छा है जहाँ उसका कुछ फल मिले ।

It is best to speak only where the intended fruit will be achieved.

136. वरमद्य कपोते न श्वो मयूरः **अथवा** वरं तत्कालोपनता तित्तरी न पुनर्दिवसांतरिता मयूरी ।

A bird in the hand is worth two in the bush.

137. वाचः कर्मातिरिच्यते ।

बोलने से कहीं अच्छा काम करके दिखाना है ।

Actions speak louder than words.

138. विनापुरुषकारेण दैवं न सिध्यति ।

God helps those who help themselves.

139. विषकुम्भं पयोमुखम् ।

A wolf in lamb’s clothing.

140. विषमपि क्वचिद् भवेत् अमृतं वा विषमीश्वरेच्छया ।

ईश्वर की इच्छा से कभी अमृत विष तथा विष भी अमृत बन जाता है ।

The Lord decides if it should be nectar or poison.

141. विषस्य विषमौषधम् ।

विष की द्वा विष ही है ।

Poison is the remedy for poison.

142. शरीरं वा पातयामि कार्यं वा साधयामि ।

करो या मरो

Do or die.

143. शिरसि फणी दूरे तत्प्रतिकारः ।

सर्प है सर पर लेकिन इलाज है दूर ।

The difficulty has arisen, but its solution is far off.

144. स तु भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला ।

अधिक धन के प्रति आसक्ति ही दरिद्रता का सूचक है ।

He who is thirsty for more, is poor.

145. सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् ।

सत्य बोलो, प्रिय बोलो किन्तु यदि सत्य अप्रिय हो तो उसे मत बोलो ।

Speak truth which is pleasant. Do not speak truth which is unpleasant.

146. सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम् ।

सन्तोष ही मनुष्य का उत्तम धन है ।

Contentment alone is a man's greatest treasure.

147. सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दम् ।

पूरा भरा हुआ घड़ा कभी भी शब्द् नहीं करता । अर्थात् अधिक पढ़े-लिखे घमण्ड नहीं करते ।

A full pot does not make sound. (The wise do not declare it.)

148. सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डितः ।

Something is better than nothing.

When complete ruin is inevitable, the wise give up their endeavors half way.

149. सर्वमर्थेन सिध्यति ।

पैसे से ही सब कुछ सिद्ध होता है ।

Wealth makes all possible.

150. सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति ।

सभी गुण धन में ही पाये जाते हैं ।

All qualities take their refuge in gold. (Wealth can make anything possible.)

151. सर्वं परवशं दुःखं सर्वात्मवशं सुखम् ।

परावलम्बन से दुःख और स्वावलम्बन से सुख मिलता है ।

That in the control of others causes pain. That which is in one's own control gives happiness.

152. सर्वः कान्तम् आत्मानं पश्यति ।

सभी लोग अपने को बुद्धिमान् ही समझते हैं ।

Each one loves himself the most.

153. सर्वः सर्वं न जानाति ।

सभी को सब कुछ नहीं आता ।

Nobody knows everything.

154. ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न संशयः ।

यदि सर्प घर में निवास करता है तो निश्चय ही मृत्यु समझना चाहिए ।

If one were to dwell in one's house with a snake, death is certain.

155. स सहृत् व्यसने यः स्यात् ।

A friend in need is a friend indeed.

156. सुखमुपदिश्यते परस्य ।

It is easy to advise or read lectures to others.

157. स्वदेशजातस्य नरस्य नूनं गुणाधिकस्यापि भवेदवज्ञा ।

अपने देश में किसी भी गुणी का मान नहीं होता ।

The meritorious ones are truly not recognized in their own country.

158. हा हन्त सम्प्रति गतानि दिनानि तानि ।

Alas! Those wonderful days are gone!

159. हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः ।

सत्य कड़वा होता है ।

It is difficult to find words that are both pleasant and beneficial.

160. ह्रदाः प्रसन्ना इव गूढनक्राः ।

वैसे तो तालाब तो बहुत सुन्दर होता है, किन्तु उसी में भयानक मगर छिपे रहते हैं ।

The exterior is pleasant but crocodiles lurk within.

****